

विश्व बंधुत्व दिवस पर चलाया गया चार दिवसीय रक्तदान महाअभियान

रक्तवीरों ने बनाया रिकार्ड

88581
यूनिट रक्तदान



शिव आम्रण, आबूरोड (राजस्थान)।

लहू शरीर की नसों में दौड़ता वह अमृत है जिसके बिना जीवन संभव नहीं है। रक्तदान ऐसा जीवनदान है जिसका कोई मोल नहीं है। ब्रह्माकुमारीज संस्थान द्वारा चलाए गए रक्तदान महाअभियान ने नया रिकार्ड बनाया है। अभियान के तहत भारत वर्ष व नेपाल में रिकार्ड 88581 यूनिट रक्तदान किया गया। इसमें 18 वर्ष के युवाओं से लेकर 60 वर्ष के वरिष्ठ नागरिकों ने उमंग-उत्साह के साथ भाग लिया। ब्रह्माकुमारी बहनों ने भी उमंग-उत्साह दिखाते हुए रक्तदान कर नारी शक्ति को संदेश दिया। बता दें कि पूर्व मुख्य प्रशासिका राज्योगिनी दादी प्रकाशमणि की 18वीं पुण्य तिथि के उपलक्ष्य में चलाया गया अभियान

- पूर्व मुख्य प्रशासिका राज्योगिनी दादी प्रकाशमणि की 18वीं पुण्य तिथि के उपलक्ष्य में चलाया गया अभियान
- ब्रह्माकुमारी बहनों ने पेश की मिसाल, उत्साह के साथ किया रक्तदान

**12044 यूनिट रक्तदान के साथ
महाराष्ट्र रहा प्रथम स्थान पर**



देशभर में सबसे ज्यादा रक्तदान 12044 यूनिट के साथ महाराष्ट्र प्रथम स्थान पर, 8756 यूनिट के साथ गुजरात दूसरे स्थान पर, 7430 यूनिट रक्तदान के साथ राजस्थान तीसरे स्थान पर रहा। नेपाल में 11916 यूनिट रक्तदान किया गया। देशभर के 1500 शहरों में शिविर आयोजित किए गए।

सामाजिक संगठनों का भी रहा सहयोग

समाज सेवा प्रभाग के राष्ट्रीय संयोजक बीके अवतार भाई ने बताया कि ब्रह्माकुमारीज के समाजसेवा प्रभाग द्वारा चलाए गए रक्तदान महाअभियान में भारत सरकार के स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, जिला ब्लड बैंक, जिला सरकारी अस्पताल, मेडिकल कॉलेज, रोटरी इंटरनेशनल क्लब, लायंस क्लब, आई-एसबीटीआई के सहयोग से रक्तदान शिविर लगाए गए। यह पहला मौका है जबकि ब्रह्माकुमारीज संगठन द्वारा इतने बड़े स्तर पर रक्तदान अभियान चलाया गया है।



रक्तदान सबसे बड़ा जीवनदान है। बुझती ज्योति को प्रज्वलित करना ही परम पुण्य है। दादी प्रकाशमणि जी की 18वीं पुण्य स्मृति पर भारत व नेपाल में रक्तदान अभियान चलाया गया। इसमें ब्रह्माकुमार भाई-बहनों ने जो उत्साह दिखाया वह काफिलतारीफ है। दादीजी का जीवन हमारे लिए आदर्श है। उनका प्रत्येक पल मानव सेवा में बीता।

- राज्योगिनी संतोष दीदी, संयुक्त मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज व अध्यक्षा, समाजसेवा प्रभाग, आबूरोड, राजस्थान



आबूरोड। मुख्यालय शातिवन के डायमंड हाल में आयोजित विशाल रक्तदान शिविर में 644 रक्तवीरों ने रक्तदान किया। इसमें 251 यूनिट रक्तदान देशभर से आई ब्रह्माकुमारी बहनों ने किया।



एक नजर में

76665 यू. भारत में
11916 यू. नेपाल में
1500 शिविर लगाए
04 दिन चला अभियान

इन राज्यों में रक्तदान

राज्य	रक्तदान
महाराष्ट्र	12044
नेपाल	11916
गुजरात	8756
राजस्थान	7430
हरियाणा	6636
कर्नाटक	5516
आंश्र प्रदेश	4775
मध्य प्रदेश	4615
उत्तर प्रदेश	4296
छत्तीसगढ़	3611
दिल्ली	3437
तेलंगाना	3012
पंजाब	1928
ओडिशा	1777
प. बंगाल	1775
बिहार	1232
हिमाचल प्र.	902
केरल	885
झारखण्ड	825
तमिलनाडु	754
चंडीगढ़	549
उत्तराखण्ड	542
असम	478
सिक्किम	400
त्रिपुरा	219
दमन-दीव	90
जम्मू-कश्मीर	84
नागालैंड	35
दादरा-नगर हवेली	28
अरुणाचल प्र.	18
अंडमान-निकोबार	16
कुल	88581



દો દિવસીય રાયલ ફેમિલી સ્પ્રીચુઅલ રિટ્રેટ આયોજિત

દેશભર સે રાજા-મહારાજાઓં કે વંશજ પહુંચે બ્રહ્માકુમારીજી

રાજા- મહારાજાઓં
કા રાજસ્થાની પગડી
પહનાકર કિયા
સ્વાગત

શિવ આમંત્રણ, આદ્વોરડ |
બ્રહ્માકુમારીજી સંસ્થાન કે
મનમાહિનેવન સિથ્ટ ગ્લોબલ
ઑફિચિયલ મેં દો દિવસીય રોયલ
ફેમિલી સ્પ્રીચુઅલ રિટ્રેટ આયોજિત
કી ગઈ | ઇસમાં દેશભર સે રાજા-
મહારાજા ઘરનો કે વંશજ ઔર રોયલ
ફેમિલી કે સદર્યોને ને ભાગ લિયા |
રિટ્રેટ મેં પહુંચે શાહી પરિવાર કે
સદર્ય, રાજા- મહારાજા ધ્યાન મેં મન
નજર આપે | સુધુ રાજયોગ સત્ર મેં
સખી ને ઉત્સાહ કે સથ ભાગ લિયા |
સખી સદર્યોનું કો શાહી અંદાજ મેં
સ્વાગત કિયા ગયા | ઇસમાં વક્તાઓને
એક સ્વર મેં કહા કે ભારત અધ્યાત્મ
કી શક્તિ સે હી ફિર સે વિશવગુર
બનેગા | આધ્યાત્મિકતા હમારી ધોરાહોર
હૈ | ઇસ દૌરાન સખી શાહીને સદર્યોને
સંસ્થાન કે માર્ટાં આદું સિથ્ટ પંડવ
ભવન, જ્ઞાન સરોવર વ અન્ય પરિસરોની
કા ભ્રમણ ભી કિયા |



દીપ પ્રજ્વલિત કર રોયલ ફેમિલી સ્પ્રીચુઅલ રિટ્રેટ કા ઉદ્ઘાટન કરતે અતિથિ |



મહારાજી મધુરાંધી સિંહ કે સથ આ એ
રાજસ્થાન બુંદી કે મહારાજા રાજા
વંશબન્ધ સિંહ ને કહા કે મૈં દૂસરી
બાર માર્ટાં આદું આયા હું | ઇસકે પહેલે
દો સાલ ફલો નોંધાલ સમિત મેં આના
બુંદી | હથ સંસ્થાન સામાજિક બદલાન કે લિન
અચ્છા કાર્ય કર રહી હૈ | યાં આકર
દૂર બાર ને આધ્યાત્મિક ઝૂંઝી કી
અનુભૂતિ હોતી હૈ |



હૈદરાબાદ કે આસફ જાહી રાજવંશ
કે નિયામ નવાબ રીનક યાર ખાન ને
કહા કે હૈદરાબાદ મેં બ્રહ્માકુમારીજી
કે કાર્યક્રમોનું મેં જાને કો મૌખીક મિલા.
સંસ્થાન સામાજિક બદલાન કે લિન
અચ્છા કાર્ય કર રહી હૈ | યાં આકર
દૂર બાર ને આધ્યાત્મિક ઝૂંઝી કી
અનુભૂતિ હોતી હૈ |



ઉત્તર પ્રદેશ રામપુર કે નવાબ સૈયેદ
મોહમ્મદ કરિયમ અત્તી ખાન બાહુર
ને કહા કે મુખી હોયા આને કો અવસર
મિલા, મૈં બુંદી ખુશી હું | રામપુર મેં ભી
બ્રહ્માકુમારીજી કાર્યક્રમ કે કો
સંસ્થાન સામાજિક બદલાન કે લિન
અચ્છા કાર્ય કર રહી હૈ | યાં આકર
દૂર બાર ને આધ્યાત્મિક ઝૂંઝી કી
અનુભૂતિ હોતી હૈ |

બ્રહ્માકુમારીજી કે પદાધિકારી વોલ્ફી-

◆ બ્રહ્માકુમારીજી કી મુખ્ય પ્રશાસિકા રાજયોગિની વીકે
મૌખીકી દીદી ને કહા કે યહ જીવન અમૃતું હૈ | ઇસે
સેવા ઔર પદમાત્ર કી યાદ મેં સફળ કરના હૈ | સબસે
એલે હું વધે જાનાની હોમા કી મૈં કોન હું હું મેરે જીવન કા
ઉત્તીર્ણ હૈ? વાસ્તવ મેં વધી આત્માનું હૈ ઔર યાં
જીવન કાર્ય હૈ | દીવાન કે દીવાન કે

ઇન રાજસ્થાનોનું કે સદર્ય ભી રહે મૌખૂદું

અતિરિક્ત મુખ્ય પ્રશાસિકા રાજયોગિની વીકે
મૌખીકી દીદી ને કહા કે યહ જીવન અમૃતું હૈ | ઇસે
સેવા ઔર પદમાત્ર કી યાદ મેં સફળ કરના હૈ | સબસે
એલે હું વધે જાનાની હોમા કી મૈં કોન હું હું મેરે જીવન કા
ઉત્તીર્ણ હૈ? વાસ્તવ મેં વધી આત્માનું હૈ ઔર યાં
જીવન કાર્ય હૈ | દીવાન કે દીવાન કે

◆ રાજયોગિની વીકે મુખી દીદી ને કહા કે પરમતા

કી સ્વરૂપ હૈ | યાં આત્માનું હૈ ઔર જીવન

◆ અતિરિક્ત મહાસચિવ વીંકે

કી મધુરાંધી વીંકે કે રોયલ
ફેમિલી કે પ્રાણિકુંઠ સુંદર છાંદી અદ્ભુત હૈ | પાડવ ભવન મેં બહુત હી શક્તિ

કી અનુભૂતિ હું અતિરિક્ત મહાસચિવ વીંકે ડૉ.

મધુરાંધી વીંકે પ્રાણિકુંઠ સુંદર છાંદી અદ્ભુત હૈ | પાડવ ભવન મેં બહુત હી શક્તિ

જ્ઞાન સરોવર મેં હુાં
શાહી પરિવારોનું
કા સન્હ મિલન

ની નિર્દેશકા વીંકે પ્રાણા દીદી ને સમાનિત કિયા |

માર્ટાં આદું સિથ્ટ જીવન અનુભૂતિ

ની નિર્દેશકા વીંકે પ્રાણા દીદી ને સમાનિત કિયા |

મધુરાંધી વીંકે પ્રાણા દીદી ને સમાનિત કિ

शारीरिक स्वास्थ्य के साथ भावनात्मक स्वास्थ्य पर भी उतना ही ध्यान देना होगा

खुशी को समझें, उसे अपने जीवन में धारण करें, मैं खुश कैसे रह सकता हूं, इन बातों पर विचार करें। हमारी खुशी कहीं बाहर से मिलेगी? या किसी और के साथ संबंधों में मिलेगी या किसी भौतिक प्राप्ति से मिलेगी, लेकिन सच यही है कि खुशी मेरे अपने ही अंदर है।



बी.के. शिवानी

जीवन प्रबंधन विषेशज्ञ, अंतर्राष्ट्रीय मोटिवेशनल स्पीकर और ब्रह्माकूमारीज की टीवी ऑफिस, गुरुग्राम, हरयाणा

जीवन प्रबंधन

शिव आमंत्रण, आबू रोड।

जीवन में हम बहुत सी चीजें देखते हैं और उनसे बहुत कुछ प्राप्त भी करते हैं। हमारे कई सप्ते होते हैं जो जीवन से जुड़े होते हैं परिवार से जुड़े होते हैं, बच्चों से जुड़े होते हैं अपने कैरियर को लेकर के होते हैं, उन्हें प्राप्त करते जाते हैं। हर प्राप्ति हमें कहीं न कहीं संतुष्टि अवश्य देती है और खुशी का एहसास कराती है। लेकिन आज हम देख रहे हैं कि जीवन में उन सभी आशाओं से गुजरते-गुजरते कहीं न कहीं हमारी खुशी कम होती जा रही है। खुशी मिली और अगले ही पल चली भी गई। फिर हम उसे दोबारा ढूँढ़ने की कोशिश करते हैं।

खुशी क्या है? उसे समझें और अपने जीवन में धारण करें। मैं खुश कैसे रह सकता हूं? क्या मैं कभी यह जान पाता हूं कि वो कौन सी ऐसी बातें हैं जो मुझे खुशी देती हैं? खुशी कहीं बाहर से मिलेगी, किसी और के साथ संबंधों में मिलेगी, किसी भौतिक प्राप्ति से मिलेगी या फिर मेरे अपने ही अंदर है!

खुशी कहीं न कहीं मिलती है, फिर चली जाती है, फिर मिलती है और फिर चली जाती है। सारे दिन में कई परिस्थितियों आती हैं, सारा दिन क्या है? यह परिस्थितियों की एक शृंखला है जो लगातार चलती ही रहती है। जैसे कोई फिल्म चल रही हो। एक दृश्य के बाद दूसरा दृश्य आता है। कोई मेरे पक्ष में होगा तो कोई दृश्य मेरे पक्ष में नहीं होगा। इसी प्रकार कोई व्यक्ति मेरे पक्ष में होगा तो कोई नहीं भी होगा। अर्थात् जैसे मैं चाहती हूं, वैसे कोई चलेगा और कोई नहीं भी चलेगा। इसका मुख्य कारण यही है कि हमारी खुशी व्यक्ति और लोगों के ऊपर निर्भर कर रहे हैं। इसलिए खुशी मिलती है फिर चली जाती है। अर्थात् एक दृश्य आया बहुत अच्छा, बच्चे समय पर सुबह उठ गए, तैयार भी हो गए और स्कूल चले भी गए तो इससे मुझे खुशी मिली। दूसरा दृश्य आया कि बच्चे समय पर तैयार तो हो गए लेकिन उनको लेने के लिए बस ही नहीं आई तो मुझे गाड़ी से छोड़ने के लिए जल्दी-जल्दी जाना पड़ा।

पहले बाले दृश्य में खुशी थी, लेकिन दूसरे दृश्य में खुशी गायब हो गई। फिर अगला दृश्य आता है

कि समय पर फिर भी स्कूल में पहुंच तो गए, बहुत अच्छा लेकिन अगला दृश्य में पहुंचते ही याद आया कि जो गृहकार्य किया था वो नोटबुक तो घर पर ही रह गई। ये सारे ऐसे दृश्य हैं जो मेरे मानसिक संतुलन पर प्रभाव डालते हैं। क्योंकि मैंने अपने मन का नियंत्रण पूरी तरह से जैसे-जैसे परिस्थितियों के हाथ में दिया हुआ है। तब मैंने सोचा कि ये सब तो स्वाभाविक ही है कि जैसे-जैसे परिस्थिति और लोग बदलते जाएंगे, मेरी सोच, मेरी अनुभूति उनके अनुसार बदलती जाएगी। इसलिए हमें कभी खुशी मिलती है तो कभी गम मिलता है और हम उसे स्वीकार कर लेते हैं।

हम अपने मन की शक्ति को परिस्थितियों को देते गए...देते गए... परिस्थितियां दिन-प्रतिदिन चुनौतीरूप होती गईं। कभी अनुकूल, कभी अशांति का जो प्रतिशत था वह बढ़ाया गया। जिसके कारण हमारे जीवन में स्थिति कम और असांति ज्यादा हो गईं। सब परिस्थितियों को संभालने के लिए शारीरिक शक्ति भी चाहिए। लेकिन पहले मैं अपनी शारीरिक क्षमता को देखूं या परिस्थिति को संभालूँ? तो जबाब मिलता है कि शारीरिक क्षमता के प्रति कुछ नहीं सोचना है, मुझे तो परिस्थिति पर ही सारा ध्यान केंद्रित करना है।

इमोशनल हेल्थ को देना होगा महत्व...

एक है शारीरिक रूप से शक्तिहीन होना और एक है भावनात्मक रूप से शक्तिहीन होना। आगर हम भावनात्मक स्वास्थ्य इमोशनल हेल्थ को भी उतना ही महत्व दें कि ये सब परिस्थितियां और भावनात्मक स्वास्थ्य अलग-अलग नहीं हैं। यदि मैं भावनात्मक रूप से स्वस्थ हूं तो परिस्थितियों को बहुत ही सरलता से पार कर सकती हूं। पहले हम क्या करते हैं, परिस्थिति को संभालने के बारे में सोचते हैं। यहां पर एक बात और आती है कि हमने शारीरिक स्वास्थ्य के लिए व्यायाम करना शुरू किया। ये सोचकर कि ये स्वास्थ्य के लिए आवश्यक है। एक जागरूकता आनी शुरू हुई है कि मुझे क्या खाना, क्या नहीं खाना है। किस समय पर खाना है और उसके लिए कितना व्यायाम करने की आवश्यकता है।

से चल पाएंगे। आजकल लोग शारीरिक स्वास्थ्य के बारे में इतना क्यों सोच रहे हैं? क्यों इतना ध्यान रखा जा रहा है? आजकल भावनात्मक दबाव इतना ज्यादा है कि कोई न कोई समस्या शरीर के साथ चलती ही रहती है। इसका कारण यह है कि हमने आत्मा का ध्यान ही नहीं रखा।

अगर हम आत्मा का भी ध्यान रखें तो मन पर जो इतना ज्यादा दबाव है, इसके लिए हमें शरीर को समय पर भोजन भी देंगे, दो दिन छोड़ देंगे, लेकिन कितने दिन तक छोड़ेंगे! यदि हमारा स्वास्थ्य अच्छा होगा, तभी हम ठीक तरह से काम कर पाएंगे। लेकिन कहीं न कहीं हमने आवश्यक भगवान अपने सभी बच्चों से कहते हैं बच्चे! मौत तो सबके सिर पर खड़ा है। इसलिए अब यह एक जन्म पवित्र बनो और बाप को याद करो तो तुम तमोप्रधान से सतोप्रधान बन जायेंगे। परमात्मा बाप की याद से ही विकर्म विनाश होंगे। और कोई रास्ता नहीं है - पतित से पावन बनने का। इस सृष्टि रांगमंच पर कर्मों का बहुत सूक्ष्म खेल चलता है, जिसे हर आत्मा पूरी तरह समझ नहीं पाती है जिस कारण वह अपना हिसाब-किताब बना लेती है। फिर उसे ही चुक्तु करना पड़ता है। जब हम किसी भी कर्मेन्द्रिय का प्रयोग करते हैं अर्थात् आँख द्वारा कुट्टिटि होती है, तो वो भी पाप कर्म बन जाता है। जबकि यह संकल्पों द्वारा किया गया पाप कर्म है जो कि योग द्वारा ही चुक्तु किया जा सकता है।

एक परमात्मा को याद करें

जीवन में आने वाली नकरात्मकता उतना महत्व नहीं रखती जितना महत्व हमारी खुशी के पैमाने का होता है। भक्तों का भी रक्षक भगवान अपने सभी बच्चों से कहते हैं बच्चे! मौत तो सबके सिर पर खड़ा है। इसलिए अब यह एक जन्म पवित्र बनो और बाप को याद करो तो तुम तमोप्रधान से सतोप्रधान बन जायेंगे। अब जल्दी ही अपना हिसाब-किताब बना लेना। बाबा ने यह कितना ही कहते थे बिंदु। सारा ज्ञान, गुण, शक्तियां सबका सिंगुलर बिंदु में समा जाता है। इसको ही कहा जाता है। अभी इस पुराने वृक्ष के परिवर्तन के समय पर वृक्ष के ऊपर मास्टर बीजरूप स्थिति में स्थित हो जाओ। बीज है ही -बिंदु। सारा ज्ञान, गुण, शक्तियां सबका सिंगुलर बिंदु में समा जाता है। इसको ही कहा जाता है। अब समान स्थिति।



- राजयोगी बीके सूरज भाई,
माडंट आबू

चाहती है और यदि आप भी सभी के बीच हल्की-सी भी कोई चुभती बात बोल देते हो तो वह एक बार दुःखी हो जाती है जोकि आपका हिसाब-किताब बन जाता है। इसलिए किसी आत्मा के शुभचिन्तक बन समझानी देनी भी है तो अकेले में बस एक ही बार दो। फिर उसे बाप हवाले कर दो अन्यथा आप छोटा-छोटा सा हिसाब-किताब बना लेते हो जो फिर चुक्तु भी तो करना पड़ेगा। अब जो समय जा रहा है वह केवल कमाई का है इसलिए अब नया हिसाब-किताब बनाना बन्द करो और हर आत्मा के प्रति रहम, प्रेम और कल्याण की भावना रख मन्सा सेवा करो। इससे आपका दुआओं का खाता जमा होगा और आप जल्दी ही अपनी मंजिल पर पहुंच जाओगे। जब कोई भी पाप कर्म संकल्पों द्वारा होता है तो वह योग द्वारा चुक्तु हो जाता है और यदि कर्मण में आ जाता है तो शरीर द्वारा और सम्बन्ध-सम्पर्क द्वारा चुक्तु करना पड़ता है।

1971 में पहली बार अव्यक्त मुरली में मैंने सुना कि बाबा ने याद दिलाया कि तुम भक्ति में कहते थे हे! भगवान जब तुम इस धरा पर आओ तो हमें अपना बना लेना। बाबा ने कहा कि इतना ही कहते थे तो तुम बस। हमने तो कभी कहा भी नहीं था, क्योंकि हमने कभी भक्ति की नहीं थी। कहते होंगे भी भक्त लोग ऐसे। बाबा ने कहा देखो बाप ने क्या कर दिया। जो तुमने कहा था वह तो पूरा कर ही दिया कि मैंने तुम्हें अपना बना लिया। इसके साथ-साथ मैं भी तुम्हारा हो गया हूं। तो वह पहला दिन था मेरे जीवन का जब मुझे ये नशा मुझे चढ़ा कि भगवान मेरा। ये तो किसी को कहना भी नहीं आता दुनिया में कितनी बड़ी चीज़ है। जो भाग्यविधाता है, वह मेरा है। आप सबने सुना होगा बाबा की मुरली में यदि कभी किसी को ऐसा लगे कि मेरा भाग्य मुझे साथ नहीं दे रहा है तो ये याद करें

EMOTIONAL HEALTH

हमें अपनी आंतरिक शक्तियों को बढ़ाना चाहिए

जब तक हम यह महसूस नहीं करेंगे कि शारीरिक स्वास्थ्य पर भावनात्मक स्वास्थ्य का कितना गहरा प्रभाव पड़ता है, तब तक हम स्थिर और शांतियां नहीं रह सकते हैं। सुखमय और आनंदमय जीवन नहीं जी सकते हैं। इसलिए हमें अपनी आंतरिक शक्तियों को बढ़ाने की मेहनत करनी चाहिए।